IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य और भारतीय आधुनिक कला: बाज़ार की चुनौतियाँ और संभावनाएँ

डॉ आशीष कुमार शृंगी

सहायक आचार्य, चित्रकला

राजकीय महाविद्यालय, बूंदी, राजस्थान, 323001

सारांश

इक्कीसवीं सदी में कला बाज़ार वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण और पूंजी के प्रवाह से गहराई से प्रभावित हुआ है। इस परिवर्तित वैश्विक परिदृश्य में भारतीय आधुनिक और समकालीन कला ने अपनी विशिष्ट पहचान निर्मित की है, किंतु इसके विकास के मार्ग में अनेक संरचनात्मक, आर्थिक और सांस्कृतिक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य वैश्विक कला बाज़ार की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हुए भारतीय आधुनिक कला के बाज़ार की समस्याओं और संभावनाओं का सम्यक अध्ययन करना है।

महत्वपूर्ण शब्द: कला बाज़ार, वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण, आधुनिक कला, संग्रहालय

प्रस्तावना

कला का क्षेत्र अब केवल सांस्कृतिक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि और निवेश का माध्यम बन चुका है। वैश्विक स्तर पर कला बाज़ार एक जटिल तंत्र के रूप में विकसित हुआ है, जिसमें नीलामी घर, निजी गैलरियाँ, कला मेले और डिजिटल मंच शामिल हैं। इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय आधुनिक कला का उद्भव और विकास विशेष महत्व रखता है। भारतीय आधुनिक कला की नींव 20वीं सदी के मध्य में स्थापित हुई, जब कलाकारों ने पारंपरिक शैलियों से आगे बढ़कर आधुनिकता, व्यक्तिवाद और वैश्विक संवाद की ओर कदम बढ़ाया। आज यह कला वैश्विक मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है, किंतु इसके बाज़ार का स्वरूप अभी भी पूर्णतः परिपक्व नहीं हो पाया है।

वैश्विक कला बाज़ार : एक समकालीन विश्लेषण

वर्तमान वैश्विक कला बाज़ार कई स्तरों पर परिवर्तन का अनुभव कर रहा है। आर्थिक अस्थिरता, राजनीतिक परिस्थितियाँ और वैश्विक संकट कला निवेश को प्रभावित करते हैं। हाल के वर्षों में यह देखा गया है कि उच्च-स्तरीय कला (blue-chip art) में स्थिरता बनी हुई है, जबकि मध्यम स्तर के कलाकारों के कार्यों की मांग में उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है।

डिजिटल क्रांति ने कला बाज़ार के स्वरूप को बदल दिया है। ऑनलाइन नीलामी, वर्चुअल गैलरियाँ और NFT (Non-Fungible Tokens) ने कला के उत्पादन, वितरण और उपभोग के नए आयाम प्रस्तुत किए हैं। यद्यपि NFT बाज़ार में प्रारंभिक उत्साह के बाद अस्थिरता आई है, फिर भी इसने कला को तकनीकी नवाचार से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त किया है। इसके अतिरिक्त, कला संग्रहकर्ताओं की प्रवृत्तियों में भी परिवर्तन आया है। युवा पीढ़ी अब कला को केवल सौंदर्य के लिए नहीं, बल्कि पहचान, निवेश और सामाजिक प्रतिष्ठा के साधन के रूप में भी देख रही है। यह प्रवृत्ति कला बाज़ार के विस्तार में सहायक सिद्ध हो रही है।

भारतीय आधुनिक कला : विकास और वैश्विक पहचान

भारतीय आधुनिक कला का विकास औपनिवेशिक काल के पश्चात एक नई चेतना के साथ हुआ। कलाकारों ने भारतीय परंपरा और पश्चिमी आधुनिकता के समन्वय से एक विशिष्ट शैली विकसित की। इस प्रक्रिया में भारतीय कला ने न केवल राष्ट्रीय पहचान को अभिव्यक्त किया, बल्कि वैश्विक संवाद में भी सक्रिय भागीदारी निभाई। 21वीं सदी में भारतीय कलाकारों की कृतियाँ अंतरराष्ट्रीय नीलामियों में उल्लेखनीय मूल्य प्राप्त कर रही हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय कला अब केवल स्थानीय बाजार तक सीमित नहीं रही, बल्कि वैश्विक कला जगत में अपनी स्थिति मजबूत कर रही है। फिर भी, यह विकास असमान है। कुछ चुनिंदा कलाकारों को अत्यधिक पहचान और मूल्य प्राप्त हुआ है, जबकि अधिकांश कलाकार अभी भी संघर्षरत हैं।

भारतीय कला बाज़ार की संरचना और सीमाएँ :

भारतीय कला बाज़ार का ढांचा अभी भी विकासशील अवस्था में है। यह मुख्यतः निजी गैलरियों, नीलामी घरों और कुछ प्रमुख कला मेलों पर निर्भर है। सार्वजनिक संस्थानों और संग्रहालयों की संख्या सीमित होने के कारण कला का व्यापक प्रसार बाधित होता है। इसके अतिरिक्त, बाजार का केंद्रीकरण एक महत्वपूर्ण समस्या है। कुछ महानगरों—जैसे दिल्ली और मुंबई—में ही कला गतिविधियाँ केंद्रित हैं, जिससे क्षेत्रीय कलाकारों को पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाते। इस प्रकार, कला बाज़ार में समावेशिता का अभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

भारतीय कला बाज़ार की प्रमुख चुनौतियाँ :

भारतीय आधुनिक कला के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण है संस्थागत ढांचे की कमी। विकसित देशों की तुलना में भारत में संग्रहालय, आर्ट फंड और शोध संस्थान कम हैं, जिससे कला का संरक्षण और प्रचार-प्रसार प्रभावित होता है। दूसरी प्रमुख समस्या वैश्विक पहचान की सीमितता है। यद्यपि भारतीय कलाकार अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उपस्थित हैं, फिर भी उनकी संख्या और प्रभाव अपेक्षाकृत कम है। इसके पीछे मार्केटिंग, नेटवर्किंग और सांस्कृतिक कूटनीति की कमी एक कारण है।

मूल्य निर्धारण और पारदर्शिता का अभाव भी एक गंभीर मुद्दा है। कला के मूल्यांकन में अक्सर असंगतता देखी जाती है, जिससे निवेशकों का विश्वास प्रभावित होता है। इसके साथ ही, नकली कलाकृतियों और प्रामाणिकता की समस्या भी बाजार को कमजोर करती है। नियामक ढांचे की अस्पष्टता और सरकारी नीतियों का अभाव भी बाजार के विकास में बाधक है। कलाकारों और बाजार के बीच मध्यस्थों की भूमिका अधिक होने के कारण कलाकारों को उचित आर्थिक लाभ नहीं मिल पाता।

संभावनाएँ : भारतीय कला का उभरता भविष्य :

इन चुनौतियों के बावजूद भारतीय कला बाज़ार में अपार संभावनाएँ निहित हैं। भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था और मध्यम वर्ग का विस्तार कला के लिए एक सशक्त उपभोक्ता वर्ग तैयार कर रहा है। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने कलाकारों को वैश्विक स्तर पर पहुँचने का अवसर प्रदान किया है। सोशल मीडिया और ऑनलाइन गैलरियों के माध्यम से कलाकार सीधे दर्शकों और खरीदारों से जुड़ सकते हैं। यह परिवर्तन पारंपरिक मध्यस्थता को कम करने में सहायक हो सकता है। युवा

पीढ़ी में कला के प्रति बढ़ती रुचि भी एक सकारात्मक संकेत है। यह न केवल बाजार को विस्तारित करेगी, बल्कि कला के नए रूपों और प्रयोगों को भी प्रोत्साहित करेगी। अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों और सहयोग के माध्यम से भारतीय कला को वैश्विक मंच पर और अधिक सशक्त बनाया जा सकता है। इसके लिए संस्थागत समर्थन और सांस्कृतिक कूटनीति की भूमिका महत्वपूर्ण होगी।

निष्कर्ष :

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारतीय आधुनिक कला एक संक्रमणकालीन अवस्था में है, जहाँ अवसर और चुनौतियाँ दोनों समान रूप से उपस्थित हैं। यह स्पष्ट है कि भारतीय कला में वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता है, किंतु इसके लिए संस्थागत सुदृढ़ता, पारदर्शिता और नीति-निर्माण आवश्यक हैं। यदि कला बाज़ार को अधिक समावेशी, पारदर्शी और तकनीकी रूप से उन्नत बनाया जाए, तो भारतीय आधुनिक कला न केवल आर्थिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी वैश्विक स्तर पर एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर सकती है।

संदर्भ (References)

1. Velthuis, O. (2005). Talking Prices: Symbolic Meanings of Prices on the Market for Contemporary Art. Princeton University Press.

2. Robertson, I. (2016). Understanding International Art Markets and Management. Routledge.

3. Thornton, S. (2008). Seven Days in the Art World. W.W. Norton & Company.

4. IBEF (India Brand Equity Foundation) Reports on Indian Art Market, 2024–25.

5. Art Basel & UBS. (2023). The Art Market Report.

6. McAndrew, C. (2024). Global Art Market Report.

7. Art India Magazine, Various Issues.

8. The Statesman & LiveMint (2024–2025) – Reports on Indian Art Market Trends.